Dainik Bhaskar (Indore), 18th February 2020, *City Bhaskar*, Page-18

आईआईटी के 11वें स्थापना दिवस पर इसरो के पूर्व प्रमुख डॉ. के. राधाकृष्णन ने कहा

अंतरिक्ष में रहने की संभावनाएं खोजेंगे वैज्ञानिक

स्थापना दिवस समारोह

सिटी रिपोर्टर . इंदौर

दुनिया के कई देश अंतरिक्ष संबंधी गतिविधियों में जुटे हैं। वह स्पेस एक्सप्लोरेशन और एक्सप्लाइटेशन ऑफ स्पेस से जुड़ी गतिविधियां शामिल हैं। आने वाले समय में वैज्ञानिक इसके जरिए अंतरिक्ष में रहने की संभावनाएं खोजेंगे। आकाशीय पिंडो और उल्का पिंडों के स्रोत का भी पता लगाएंगे। इसमें 50 से 100 साल का समय लग सकता है। बायोएस्ट्रोनॉटिक और एस्ट्रोबायोलॉजी आज शुरुआती दौर में है, लेकिन अंतरिक्ष विज्ञान का भविष्य यही होगा।

यह बात इसरो के पूर्व प्रमुख डॉ. के. राधाकृष्णन ने आईआईटी के 11वें स्थापना दिवस के मौके पर कही।

अंतरिक्ष के लिए मानव मिशन में यात्रियों की सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण

भारत के गगनयान मिशन पर उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष में किसी भी मानव मिशन में सबसे ज्यादा जरूरी है अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा। उन्हें सुरक्षित तरीके से वहां पहुंचाना और धरती पर लाना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा रास्ते में कोई दुर्घटना होती है तो इंजेक्शन सिस्टम किस तरह काम करेगा, इस पर भी ध्यान देना होता है। अंतरिक्ष विज्ञान में आज हम चंद्रमा और मंगल पर रोबोट्स भेजते हैं, लेकिन उनकी सीमाएं हैं। उन्हें जिन कामों के लिए प्रोग्राम किया जाता है, उससे ज्यादा क्या वे खुद निर्णय ले सकते हैं? अंतरिक्ष में आज खत्म हो चुके सैटेलाइट के 20 हजार से ज्यादा छोटे-बड़े टुकड़े तेज गति से घूम रहे हैं। इनसे किस तरह निपटा जा सकता है या कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है कि ये काम कर रहे किसी सैटेलाइट को नुकसान न पहुंचाएं। कार्यक्रम में आईआईटी बोर्ड के चेयरमैन डॉ. दीपक बी. फाटक और कार्यकारी निदेशक डॉ. नीलेश जैन भी मौजूद थे। अतिथियों ने आईआईटी परिसर में बने दो होस्टल का उद्घाटन और पौधरोपण किया।

इसरो हर साल 300 युवाओं को देता है रोजगार

डॉ. राधाकृष्णन ने कहा कि इसरो हर साल 250 से 300 नए युवाओं को रोजगार देता है। स्पेस साइंस के साथ अन्य विषयों में पढ़ाई करने वाले छात्रों के लिए भी यहां अवसर हैं। देश में इसरो और अंतरिक्ष विज्ञान के लिए काम करने वाले अलग-अलग संस्थान हैं इनके जरिए युवा इन संस्थाओं में अपना भविष्य बना सकते हैं।